तिरुमल तिरुपति देवस्थान

बाल सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका
अक्तूबर-2020

सप्तगिरि का परिशिष्ट

विजयी भव
वेंकटशैलपते!

नवरात्रि के अवसर पर गुड़ियों का दरबार

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

बालसप्तगिरि

सप्तगिरि का परिशिष्ट

अक्तूबर-२०२०

वर्ष-०१
अंक-०८

विषयसूची

हिन्दू देवता	आनंदनिलय भगवान श्री सी.सुधाकर रेड्डी	32
पन्निद्दरालवार	तोंडरडिपोड़ि आल्वार (भक्तांघ्रिरेणु) श्री कमल किशोर ही. तापडिया	34
कन्नड हरिदासवरेण्य	भक्त गोपाल दास श्रीमती सी.मंजुला	36
चित्रकथा	'तुम्बिमान कोण्डि' की मोक्ष प्राप्ति तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी चित्रकार - श्री के.द्वारकानाथ	38
बालनीति	अपराधी के लिए उपकार श्रीमती टी.त्रिवेणी	42
विशिष्ट बालिका		44
'क्विज'	डॉ.जी.मोहन नायुडु	45
चित्रलेखन		46

मुखचित्र - आनंदनिलय।

चौथा कवर पृष्ठ - सरस्वती देवी के अलंकार में श्री पद्मावतीदेवी।

हिन्दू देवता

आनंदनिलय भगवान

- श्री सी.सुधाकर रेड्डी

तिरुमल में श्री वेंकटेश्वर स्वामी एक स्वयं व्यक्त देवता है। श्रीनिवास अभय प्रदाता है, जो इस क्षेत्र को दर्शन करनेवाले भक्तों द्वारा माँगी गई इच्छाओं की पूर्ति करते है।

दक्षिण भारत में श्री वेंकटेश्वर को कई नामों से जाना जाता है। उत्तर भारत के लोग श्री वेंकटेश्वर को केवल 'बालाजी' के नाम से जानते हैं। विदित हो कि 'बालाजी' के अलावा भी श्री वेंकटेश्वर के कई नाम है। उनमें एक नाम 'आनंदनिलयवासी' है। प्यारे बच्चों! हम इस कहानी में आनंदनिलयवासी की विशिष्टता के बारे में जानकारी हासिल करेंगे।

तिरुमलेश्वर के लिए अनेक... अनेकानेक नाम होने पर भी 'आनंदनिलयवासी' के नाम में रहे हर अक्षर सार्थक होकर विराजमान हो रहा है। तिरुमल की यात्रा के लिए निकलते है तो एक तरह का आनंद होता है। सात पहाडियों में घूमना एक अवर्णनीय आनंद है। ब्रह्मांड नायक के सोने की इमारत 'आनंदनिलय' को एक बार आँख भर से दर्शन करने से वह एक दिव्यानंद है। जो आनंदनिलय के अंदर रहकर, हमेशा भक्तों की प्रतीक्षा में रहे सप्तगिरीश के दर्शन करना वह एक परमानंद है। दर्शन करनेवाले हर एक भक्त को इन सुखों की श्रृंखला मिलती है... हर दर्शन में मिलता है। श्री

महाविष्णु लोक मंगल के लिए, भक्तों के लिए वैकुंठ छोड़कर श्री वेंकटेश्वर के नाम से तिरुमल में विराजित हो गए। जब से श्री वेंकटेश्वर, सम्राट तोंडमान द्वारा निर्मित आनंदनिलय में प्रवेश किए हुए दिन से भक्तों की इच्छाओं के अनुसार भेंटे देनेवाले प्रत्यक्ष देव के रूप में पूजा की जाती है।

इस तरह हर भक्त के हर कदम पर, हर कण-कण पर आनंद में कंपित कर रहे वेंकटाद्रि को 'आनंदाचलम', स्वामी के स्वर्ण गुंबद को आनंदनिलय, उसमें आविर्भूत हुए स्वामी के लिए 'आनंदनिलय भगवान' नाम से प्रसिद्ध नाम बने थे।

''आनंद जनकत्त्वात्तं आनंद निलयं विदुः।
वरपद्मासने सुस्थां विधाय कमलालयम्।।''

साक्षात् वैकुंठवासी श्री वेंकटेश्वर पद्मासनी होनेवाली वक्षःस्थल श्री महालक्ष्मी सहित प्रत्यक्ष रूप से इधर उतर कर, बसे हुए भूलोक वैकुंठ ही यह दिव्य स्थल है। दर्शन होने के तुरन्त अव्यक्त आनंद को देते हैं, इसलिए यह 'आनंदनिलय' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इस स्वर्ण विमान के साथ, उस विमान पर रहे श्रीनिवास के दर्शन करने से सभी जीवों के पाप दूर हो जाते हैं।

वेंकटाचल एक ऐसा क्षेत्र है जो लगातार भक्तों को आकर्षित करता है, सभी युगों में, उतने लोगों की कामनाओं को कई तरीकों से पूरा करता है, उन्हें सर्वोच्च आनंद देता है।

प्रसिद्ध आनंदाचल पर, भक्तों को इस आनंदनिलय के दर्शन करने पर सभी को आशीर्वाद मिलता है।

तोंडरडिपोड़ि आल्वार
(भक्तांघ्रिरेणु)

- श्री कमल किशोर हि. तापडिया

चोलमण्डल के मंडगुड़ी नामक नगर में श्री विप्रनारायण नामक एक भगवतभक्त परायण ब्राह्मण रहा करते थे। इनका जन्म धनुर्मास के ज्येष्ठा नक्षत्र में हुआ था। वेद वेदान्त ज्ञान संपन्न बालक श्री विप्रनारायण ने यह सोचकर की सारी सांसारिक वासनाएँ जलती अग्नि की ज्वाला के समान हैं तथा उनका शमन अपरिग्रह से ही सम्भव है, सांसारिकता में आत्मस्वरूप के नाश का भय बना रहता है। इस तरह सांसारिकता का सर्वत्र त्याग करके गृहस्थ स्वीकार करने के विमुख होकर सदा रंगनाथ भगवान की ही सेवा में तल्लीन रहने लगे। अतः श्रीरंगधाम में तुलसी और पुष्प की अत्यन्त मनोरम पुष्प वाटिका लगाकर वे नित्य ही भगवान रंगनाथजी के लिए तुलसी और पुष्पमाला को तैयार करके उनकी पुष्प सेवा सम्पन्न करने में ही जीवन को समर्पित कर दिए। स्वयं मधुकरी करके भगवान को भोग लगाते थे। इस तरह सतत भगवत् कैंकर्य परायण श्री विप्रनारायण मुनि की दिनचर्या विष्णुचित्त सूरि की दिनचर्या के सदृश हो गई थी। नन्दन वन के समान उनका विशाल एवं आकर्षक उद्यान मात्र रंगनाथ भगवान की सेवा के लिए था और उसी में वे ब्रह्मचर्य पूर्वक निवास करते थे।

भगवान के संकल्प से कालान्तर से श्री विप्रनारायण का विवाह देवदेवी नामक वेश्या से हुआ। वे अपनी गृहस्थी उसी उद्यान में बीता रहे थे।

विप्रनारायण के पास धन का अभाव देखकर देवदेवी ने उनका त्याग कर दिया। पत्नी के मोह में ब्राह्मण अपना नित्य कैंकर्य को त्याग कर पत्नी के पीछे लग गए। भक्त की यह दयनीय दशा श्रीलक्ष्मी जी देख नहीं सकी। भगवान से प्रार्थना करके विप्र को माया के जाल से छुड़ाने की विनंती की। भगवान जी ने देवीजी की विनंती सुनकर अपने लाडले भक्त पर कृपा करके माया से मुक्त किया।

अपने प्रारब्ध अनुसार कारागार से मुक्त होते ही श्री विप्रनारायण के ज्ञान नेत्र खुल गये और उन्होंने वेद-वेदान्त ज्ञान भगवतभक्त परायण एकान्तिक श्रीवैष्णवों का पादतीर्थ लेकर प्रायश्चित किया। भगवान के तीर्थ से भी ज्यादा पवित्र करने वाला भागवतों के श्रीचरणों का तीर्थ होता है। चूंकि श्री विप्रनारायण ने अपने पाप का प्रायश्चित करने के लिए भागवतों के तीर्थ को लेकर किया और उसे भगवत तीर्थ से भी पावन माना। अतः तब से ही वे 'श्री भक्तांघ्रिरेणु सूरि' नाम से प्रसिद्ध हुए। श्रीसूरि अपनी ज्ञान एवं भक्ति की पराकाष्ठा पर पहुँच कर द्वादश सूरियों में प्रसिद्ध हुए।

श्री भक्तांघ्रिरेणु सूरि भगवान श्रीरंगनाथ के साथ ही अपना सम्बन्ध मानकर उनके नित्य कैंकर्य के लिये तुलसी और पुष्प की मालाओं का निर्माण किया करते थे, साथ ही उन्होंने 'श्रीमाला' और 'प्राबोधिकी सत्व' नामक दो ग्रंथों की रचना की। 'तिरुपल्ली एलुच्ची' और 'तिरिमालै' नामक दो प्रबन्ध की रचना की। तिरुपल्ली एलुच्ची श्रीरंगनाथ भगवान के सुप्रभात के रूप में श्रीवैष्णव नित्य निवेदन करने की प्रथा है। प्राबोधिकी सत्व की सभी गाथाओं से भगवान श्रीरंगनाथ की ही स्तुति की गयी है। मुनि ने कुल चार दिव्यदेश में मंगलाशासन किया।

शिक्षा - मनुष्य जीवन का मुख्य उद्देश्य भगवान की नित्य सेवा किंकर ही है। भगवान के परम एकान्तिक भक्त की महत्ता भगवान से भी ज्यादा होती है।

भक्त गोपाल दास

- श्रीमती सी.मंजुला

गोपालदास (१७२१-१७६९) १७वीं सदी के कन्नड भाषा के एक प्रमुख कवि और संत थे जो हरिदास परंपरा से संबंधित थे। विजय दास और जगन्नाथ दास जैसे अन्य समकालीन हरिदासों के साथ गोपाल दास ने दक्षिण भारत में माधवाचार्य के द्वैत दर्शन का प्रसार ''दशरा पडगालु'' नामक कीर्तनों ''(भगवान के गीत)'' के माध्यम से किया, जिनका कलम-नाम (अंकिता नाम या मुद्रा) गोपाल विट्ठल है।

जन्म के समय गोपाल दास का नाम ''भगन्न'' था। उनका जन्म भारत के कर्नाटक राज्य के रायचूर जिले के मोसरकल्लू नामक गाँव में हुआ था। माधव व्यवस्था में दीक्षा के बाद, वह विजय दास के शिष्य बन गए और उन्हें एक प्रसिद्ध संगीतकार होने का श्रेय भी मिला। उन्हें एक ज्योतिषी के रूप में भी जाना जाता है। बाद में गोपाल दास ने हिन्दू देवता विष्णु की स्तुति में मधुर गीतों की रचना करने के लिए सुप्रसिद्ध महिला संत हेलवानकट गिरियम्मा को प्रेरित किया।

किंवदती है कि एक बार १८वीं शताब्दी के एक प्रमुख हरिदासी विजय दास ने जगन्नाथ दास को अपने भक्तों के साथ एक धार्मिक समारोह में शामिल होने और भोजन करने के लिए आमंत्रित किया था। जगन्नाथ दास, जो संस्कृत में अपनी विद्वता के लिए जाने जाते थे, उसने कन्नड हरिदास के साथ घुल-मिलना बेकार समझा और पेट में तेज दर्द होने का बहाना किया। एक अन्य श्रोत से दावा किया जाता है कि जगन्नाथ दास ने तपेदिक की बीमारी का बहाना करके खुद को आने में असमर्थ बताया। जल्द ही जगन्नाथ दास वास्तव में तीव्र पेट दर्द से पीडित होने लगे। एक उपयुक्त उपाय खोजने में असमर्थ, होकर वह विजय दास के पास गए, जिन्होंने गोपाल दास से संपर्क करने की सलाह दी। जगन्नाथ दास की समस्या का समाधान गोपाल दास ने किया था। हरिदास के प्रति अपनी गलती और गलत रवये से महसूस करते हुए जगन्नाथ दास माधव व्यवस्था में शामिल हो गए और इसके सबसे बड़े समर्थकों में से एक बन गए।

भक्त गोपाल दास के संकीर्तनों में 'मूरु नामगलधरिसिद कारणवेनु', 'ओगतनदलि सुखविल्ल', 'बारय्यबाबाभकुतर प्रिया' कीर्तन सुप्रसिद्ध हुए। कर्नाटक संगीतकारों ने भजन समूहों में इन गीतों का उपयोग जारी रखा है। 'पालिसय्य पवननय्या। पालवारिधिसय्य वेंकटराय' नाम के कीर्तन में वेंकटरमणा की 'हेपवनुनि' को अय्या के रूप में, 'दूध पुल' को शय्या के रूप में हम को शासन कीजिए। ऐसा पल्लवि में स्तुति की।

''कालकालके हृदयालया दोलु निन्न, शीलमूरुति तोरो मेलु करुणदि''

मुझे अपने दिल में दया की अपनी सुन्दर मूर्ति को हमेशा केलिए दिखाओ।

एक और संकीर्तन में गोपाल दास ने श्री वेंकटेश्वर स्वामी के प्रति इस प्रकार विनती की-

''श्रीश! संसार वेंबो सूसुव शरधि योल्, ई सलारेनु हरिये एन्नय धोरेये।
दास नेंतेंद मेले घासि गोलिसुवुदु, लेसु निनगल्लवय्या हेजीय।
दोषराशि गलेल्ल नाशमाडि!, विशेष ज्ञान वैराग्य भक्ति यित्तु।
आसेय बिडिसेन्नु मीसलमन माडि। नी सलहो श्रीनिवासकृपालो।।''

उसका अर्थ इस प्रकार है- श्रीश! श्रीनिवास! संसार रूपी इस भयंकर समुद्र को पार न कर पार रहा हूँ। हे स्वामी! दास के रूप में प्रार्थना करने पर भी निरादर भावना से रहना अच्छा नहीं है। हे स्वामी! मुझ में रहे दोष राशियों को दूर करके विशेष रूप से ज्ञान, भक्ति, वैराग्य प्रदान करके मुझ में रहे लालच को दूर कर, मेरे मन को आप के प्रति दृढता के साथ रहने के लिए कृपा के साथ रक्षा करे।

एक और संकीर्तन में गोपाल दास ने श्री वेंकटेश्वर के ऊर्ध्वपुण्ड्र नामम् को देखा और उसके बारे में इस प्रकार कहा- ''मूमनामगल धरिसिद कारणमेमि! तेलुपवय्या'', ''मूरुलोक गलि हवु। मूरुरूपनु नानु। मूरु माल्वेनु जगव! मूरुगुणदि। मूरु तापवगेद्दु मार्गदि भजिसे, पारु माडुवेनेंदु तोरुबगेये।''

उपर्युक्त का भाव इस प्रकार है - हे स्वामी! तीन लोक है। (वे स्वर्ग, भूमि, पाताल है) इनके तीन रूप है (ब्रह्म, विष्णु, महेश्वर) ऐसा मानकर जगत को तीन करेंगे (सृष्टि, स्थिति, लय) तीन गुणों से (सत्त्व, रज, तमो गुणों से) तीन तापों पर विजय प्राप्त करके आदि दैविक, आदि भौतिक, आद्यात्मिक तापों पर विजय प्राप्त करके, मार्ग निर्देश से पूजा करके संसार सागर भय से दूरी करने वाले भगवान के रूप में मालूम होता है।

चित्रकथा

'तुम्बिमान कोण्डि' की मोक्ष प्राप्ति

तेलुगु में - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
हिन्दी में - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी
चित्र - श्री के.द्वारकानाथ

श्रीरामानुजाचार्य जब एक वर्ष भर के लिए तिरुपति में रहते हैं, तब तुम्बिमान कोण्डि नामक स्त्री, उनके लिए आवश्यक दूध, दही, घी आदि घर पहुँचाती है। श्रीरामानुज उस स्त्री को पैसा चुकाने के लिए, बुलाते हैं।

माता! दूध, दही, घी तुमने दिया, उसके लिए अब पैसे लो!

हे स्वामी! मुझे ये पैसे नहीं चाहिए!

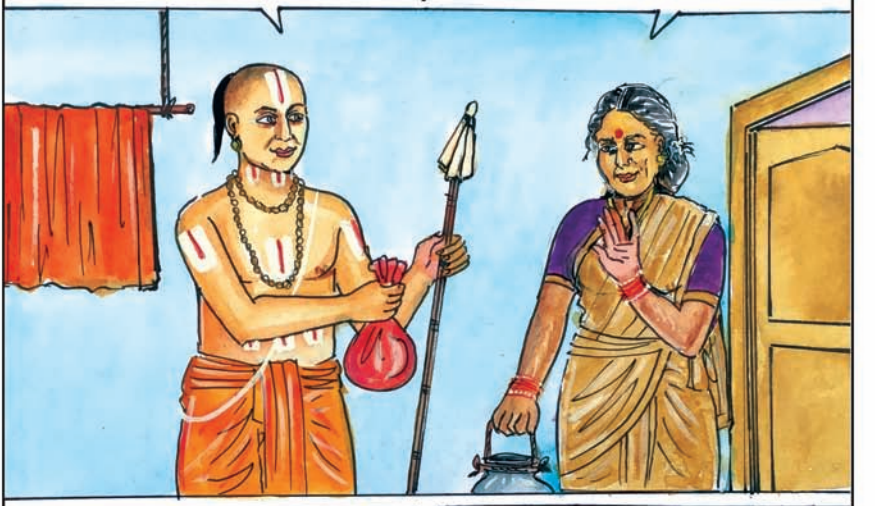

तो किस प्रकार का धन तुम्हें चाहिए?

मुझे मोक्षधन चाहिए, उसे दीजिए!

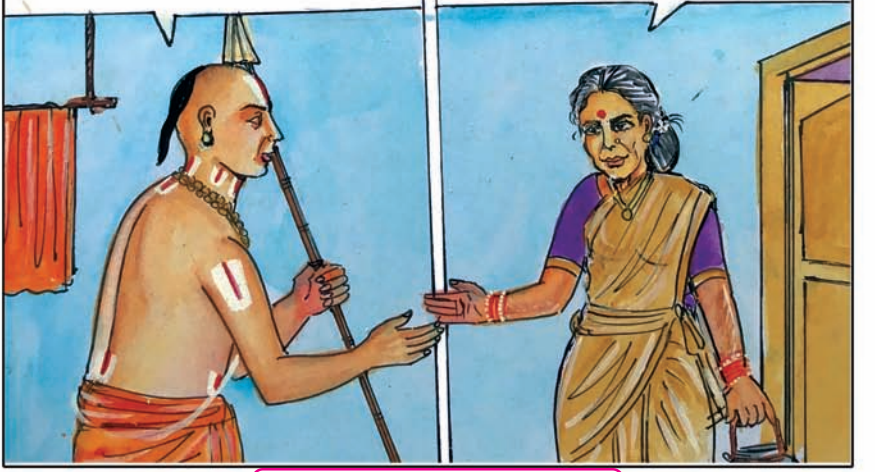

क्या? मोक्षधन! तुमसे किसने कहा कि वह धन मेरे पास है?
आप अगर चिट्ठी लिखकर दोगे तो श्रीनिवास मुझे मोक्ष प्रदान करेगा।
तो मैं क्या लिखूँ!
आप बस इतना लिखिए कि मुझे निश्चित ही वे मोक्ष दें।

ठीक है! लिखकर दूँ तो वह चिट्ठी लेकर क्या करोगी?

मैं पहाड़ पर जाकर उस चिट्ठी को स्वामी को दिखाऊँगी। वह मुझे निश्चित ही मोक्ष देगा।

उस स्त्री में जो ऊपार विश्वास है, उसे देखकर श्रीरामानुज बहुत प्रसन्न हो उठे।

ठीक है! मैं लिख देता हूँ।

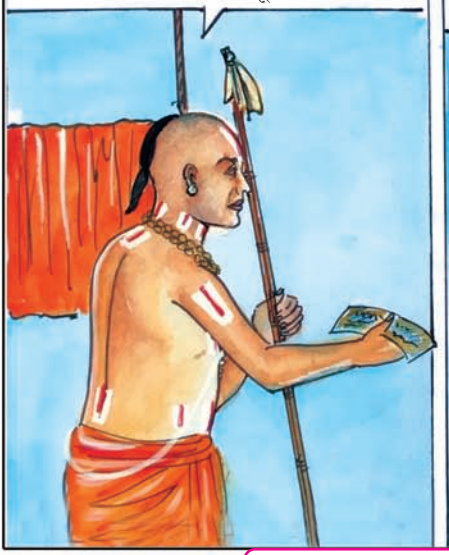

'तुम्बिमान कोण्डि ने संकल्पपूर्वक भागवत सेवा की है। कृपया इस स्त्री को मोक्ष प्रदान करो हे स्वामी!' श्रीरामानुज, चिट्ठी में ऐसा लिखकर स्त्री को दिया।

हे स्वामी! मैं कृतार्थ हुई।

तुम्बिमान कोण्डि उस चिट्ठी को साथ ले जाकर, भगवान को समर्पित करके, उपवास रखकर, रात-दिन जागकर भगवान की प्रार्थना में लग गई। उसका शरीर कृशवत हो गया।

हे स्वामी! मुझे मोक्ष दो।

तेरी भक्ति से मैं प्रसन्न हुआ। तुम्हें मोक्ष दे रहा हूँ। वह रहा दिव्य विमान!... उसमें चढ़ो!

गोविन्द का नामस्मरण करते हुए तुम्बिमान कोण्डि, दिव्य विमान में चढ़ गई तथा वैकुंठधाम में पहुँच गई।

गोविन्दा...
गोविन्दा...
गोविन्दा...

श्री वेंकटेश्वर स्वामी की एक अलग लीला विलास का दर्शन करेंगे... तरेंगे!

स्वस्ति।

बालनीति

अपराधी के लिए उपकार

- श्रीमती टी.त्रिवेणी

बोय जाति के एक आदमी महर्षि की तरह बदलकर रामायण महाकाव्य की रचना की। वाल्मीकि ने नारद के आशीर्वाद से रामायण महाकाव्य का आरंभ किया। रामायण को भारतीय साहित्य में आदिकाव्य और वाल्मीकि को प्रवर्तक के रूप में जाना जाता है।

रावण जिसने सीता का अपहरण किया था, उसे लंका में कैद कर, राक्षस स्त्रियों को उनको रक्षा के रूप में रखा था। भगवान राम ने लंका में सीता की कैद के बारे में जाना। उन्होंने वानर सेना के साथ एक पुल बनाया और समुद्र को पार किया। इन्द्रजीत और कुंभकर्ण जैसे राक्षस युद्ध में मारे गए। रावण के वध के साथ युद्ध समाप्त हो गया। तब हनुमान सीता के पास गए और कहा- ''हे माँ! इन सभी दानव महिलाओं ने आपको चोट पहुँचाई... और कहा कि आप मुझे अपनी मुही से मारने के लिए एकमात्र अवसर देने से इनको इधर ही मारूँगा।'' सीता ने हनुमान के क्रोध को समझकर इस प्रकार कहा- हे पुत्र! आपने वही किया जो आपके प्रभु ने आपको करने केलिए कहा था। उन्होंने वही किया जो उनके भगवान ने उन्हें करने के लिए कहा था... इसलिए उसने उनसे कहा कि उनके प्रति हानि न करे। हमारे पास आए हुए अतिथि कैसे भी होने पर, हमारे पास आकर गलत करने पर भी उनको माफ करना है। सीता ने इससे संबंधित एक बोय जाति के आदमी की कहानी बतायी थी।

एक बोया शिकार करने जाता था और कई जानवरों को शिकार करके अपना जीवन यापन करता था। हालांकि एक दिन एक बाघ ने उसका पीछा किया। इससे बचने के लिए शिकारी डरकर भागा। इस तरह थोड़ी दूर दौडने के बाद, उसे एक बडा वृक्ष दिखाई पड़ा, उसे लगाकि उस पर चढ़ने से बाघ नही आयेगा। इसलिए उसने महसूस किया कि पेड़ चढ़ने से सुरक्षित होगा। उस पेड़ पर चढ़ते समय देखा कि उधर एक भालू था। उसे देखकर, शिकारी ने अपना जीवन खो दिया। जिस भालू से अपना डर लगता था... उस भालू ने उनके डर को समझकर कहा कि- तुम जाने-अनजाने में मेरे पास आया,

इसलिए तुम को मैं अभय प्रदान करता हूँ। तुम्हारी रक्षा करना मेरा कर्तव्य हैं। भालू के शब्दों से शिकारी ने आहें भरी। पीछा करता हुआ आया बाघ ने भालू को देखकर कहा- 'मित्र! वह एक आदमी है... कोई आभार नहीं होगा। हम दोनों जानवर है इसलिए उनको नीचे ढकेल दे... तब खाकर चला जाता हूँ।' तब भालू ने कहा कि वह डर से मेरे पास आया... वह मेरे लिए अतिथि है उत्तर दिया कि मैं तो वादा किया इसलिए रक्षा करना मेरा कर्तव्य है। ऐसा दोनों के बीच में कुछ समय तक तर्क-वितर्क हुआ। कुछ समय के बाद भालू सो गया।

तब बाघ ने शिकारी को वश में करने की कोशिश की। दोस्त! उस भालू ने आप को खाने के लिए 'अतिथि' नामक ऐसा नाटक खेला और कहा कि मेरे जाने के बाद आप को खायेगा। इसलिए यदि आप उसे नीचे धकेलते है, तो आप को छोड दूँगा। इस प्रकार बाघ ने शिकारी से सूचना दी। बाघ के कथन को सच माननेवाले शिकारी ने सोते हुए भालू को अचानक नीचे धकेल दिया। जैसे ही भालू उठा, वह नीचे गिरनेवाला था, पेड की डाली को पकडकर झूला। डाली की सहायता से ऊपर आया और कहा कि मित्र! बाघ ने जो बताया था कि मैं खाऊँगा इसलिए तुम डरते हो... डरो मत... तुम मेरे अतिथि है, ऐसा कहकर उधर ही रहे भोजन उनको दिया

उसके बाद बाघ ने भालू से कहा कि मानव स्वर्थी है, इन नीच मानव अपने स्वार्थ के लिए जो आश्रय दिए है, उनको भी मारने के लिए नहीं हिचकिचाएंगे। वे कृतघ्न है।... इसलिए मैं कहता हूँ कि उसे नीचे धकेल दे, मैं खाकर चला जाता हूँ। इस पर भालू थोड़ा मुस्कराया। कुछ न करने की स्थिति पाकर बाघ वहाँ से चला गया। अपने को नुकसान करने वालों का भला करना ही अच्छा गुण है। हनुमान को सीता ने विस्तार से समझाया कि जैसे उनके प्रभु ने कहा, वैसे ही किया, कोई शत्रुता नही है। मारुती ने कहा कि- हे माता! तुम्हारे समान शीलवति, उत्तम इस युग में नहीं, कोई भी युग में पैदा नहीं हुआ था और पैदा नही होगा। बुराई करनेवालों का भला करना भगवान की कृपा है।

नीति - अपराधी के लिए उपकार करना ही मानव का उत्तम गुण है।

विशिष्ट बालिका

नाम : टी.एम.पर्वत वर्धिनी

जन्म : १२ मई, २००६

कक्षा : नौवी कक्षा

विद्यालय : स्प्रिंगडेल पब्लिक स्कूल, करकमबाडी रोड, तिरुपति

माताजी का नाम : श्रीमती टी.भवानी

पिताजी का नाम : श्री टी.यस.महेन्द्र कुमार

प्राप्त किए गए पुरस्कार :

२०१७-१८	- जिला भगवद्गीता प्रतियोगिता में	- दूसरा पुरस्कार
	- 'स्पेल बी' प्रतियोगिता में	- प्रथम पुरस्कार
२०१८-१९	- जिला भगवद्गीता प्रतियोगिता में	- प्रथम पुरस्कार
	- उच्चारण भाषण प्रतियोगिता में	- प्रथम पुरस्कार
	- गणित मैराथन में	- प्रथम पुरस्कार
	- सुंदर लेखन प्रतियोगिता में	- प्रथम पुरस्कार
	- विविध विभागों में प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम	- प्रथम पुरस्कार
२०१९-२०	- भगवद्गीता प्रतियोगिता में	- दूसरा पुरस्कार
	- उच्चारण अभिव्यक्ति में	- प्रथम पुरस्कार
	- इस्कॉन मौखिक प्रतियोगिता में	- प्रथम पुरस्कार
	- कला प्रतियोगिता में	- दूसरा पुरस्कार
	- 'तेलुगु में बात करते हैं' प्रतियोगिता में	- तीसरा पुरस्कार
	- प्रतिभाशाली लेखन के लिए पुरस्कार	
	- खेल प्रतियोगिता - दौड प्रतियोगिता में	- प्रथम पुरस्कार
	- रॉक, पेपर और सीजर खेल प्रतियोगिता में	- प्रथम पुरस्कार

विशेष प्रतिभाएँ - नृत्य, संगीत

१) कालिका दुर्गा मंदिर, बेंगलूरु में नृत्य प्रदर्शन

२) शिल्पाराम, तिरुपति में नृत्य प्रदर्शन

३) तिरुपति में संपन्न कार्तिक दीपोत्सव कार्यक्रम में नृत्य प्रदर्शन

४) तिरुपति शहर नगर पालिका द्वारा आयोजित बाल दिवस समारोह में नृत्य प्रदर्शन

‘क्विज’

आयोजक - डॉ.जी.मोहन नायुडु

१) भगवान ‘विष्णु’ का वाहन कौन-सा है?

अ) मयूर आ) नंदी

इ) गरुड ई) गाय

२) महाभारत में ‘अभिमन्यु’ के पिता का नाम क्या है?

अ) भीम आ) अर्जुन

इ) नकुल ई) सहदेव

३) धन की देवी ‘लक्ष्मी’ का वाहन कौन-सा है?

अ) हाथी आ) बिल्ली

इ) उल्लू ई) हँस

४) ‘हलधर’ के नाम से कौन प्रसिद्ध है?

अ) राम आ) लक्ष्मण

इ) भरत ई) बलराम

५) ‘वायुपुत्र’ के नाम से कौन प्रसिद्ध है?

अ) अंगद आ) हनुमान

इ) वालि ई) सुग्रीव

६) महाभारत में ‘धृतराष्ट्र’ की माता का नाम क्या है?

अ) अंबा आ) अंबिका

इ) अंबालिका ई) अर्चना

७) ‘सृतकर्मा’ के पिता का नाम क्या है?

अ) भीम आ) नकुल

इ) अर्जुन ई) सहदेव

जवाब - १) इ २) आ ३) इ ४) ई ५) आ ६) आ ७) इ

चित्रलेखन

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

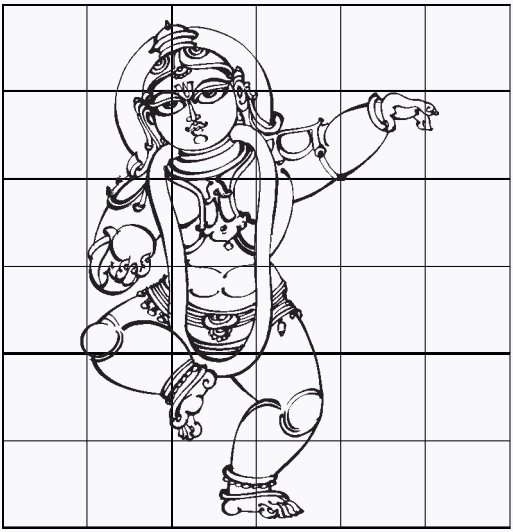

ऊपर सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये -

बाल-बच्चों का सांस्कृतिक वेष धारण

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams printing on 25-09-2020. Regd. with the Registrar of Newspapers under "RNI" No.10742, Postal Regd.No.TRP/11 - 2018-2020
Licensed to post without prepayment No.PMGK/RNP/WPP-04/2018-2020

सरस्वती देवी के अलंकार में
श्री पद्मावतीदेवी